लोरेटो रांची में पहली बार

कुछ दिनों पहले जब लोरेटो की नयी प्रिंसीपल मेरियन वास ने मुझसे आग्रह किया कि मैं उनके संस्थापिका दिवस में स्कूल मिस्सा के लिये आउं, तो मैंने हामी भरने में देर नहीं की। मुझे लगा कि मेरे पुरोहिताई जीवन के इतने सालों बाद यहां से पहली बार निमंत्रण मिला है, मुझे न नहीं करना चाहिये। मैंने अपनी डायरी निकाल कर देखा कि कोई खास काम उस दिन नहीं है तब मैंने उनसे आग्रह किया कि मिस्सा का विषय और जरूरी बातें मुझे दे दी जाएं। कुछ ही दिनों में मुझे मेरी वान, इंस्टीटयुट आफ बेलेसेड वर्जिन मेरी की संस्थापिका पर एक छोटी सी पुस्तक दी गयी, साथ ही मिस्सा की धर्मविधि भी।

फुर्सत निकाल कर जब मैंने मेरी वान की छोटी जीवनी पढ़ी तो लगा कि जेस्विटों से इस धर्मसमाज का बहुत करीबी संबंध है जिसके बारे में पूरी तरह से अनभिज्ञ था। मेरी वान जिनका जन्म इंग्लैंड में हुआ था येसु समाजियों के बहुत करीब थीं और अपने धर्म समाज के नियमों और धार्मिकता को पूरी तरह से येसु समाज के संविधान के अनुरूप ही ढाल दिया था। ऐसा नहीं था कि येसु समाजियों ने उन्हें पूरी तरह से हमेशा सहयोग दिया था। जरूरत की घड़ी वे उसे अकेला छोड़ चले थे। फिर भी हिम्मत उसने नहीं हारा और अब भी पूरा धर्मसमाज येसु संध के नियमों के अनुरूप अपने संविधान को रखता है। इन बातों को पढ़कर मैं थोड़ा झेंप गया। मन ही मन सोचा कि चलो कि कुछ प्राश्चित करने का मौका मिला है।

जैसा स्कूल के बारे में सुना था वैसे ही देखा। सारी छात्राएं ठीक साढ़े नौ बजे स्कूल के प्रांगण में अपने स्थान में तैयार मिलीं। हम चार येसु संघी पुरोहित थे। परिधान पहनने के बाद आदिवासी नृत्य से हमें परिघाया गया। आरंभिक स्वागत के बाद संघ के काम के विस्तार को छात्राओं ने प्रस्तुत किया। स्कूल के क्वायर ने अच्छी प्रैक्टिस की थी, इसलिये मिस्सा के गाने अच्छे थे। मिस्सा में एक साथ पूरे स्कूल का होना अच्छी बात है लेकिन इसके साथ ही उन तमाम बच्चियों को भी साथ लेकर चलना पड़ता है जो कि काथलिक नहीं हैं। जब भी उन गैर काथलिकों के लिये मिस्सा का कोई भाग रुचिकर नहीं लगता, वे आपस में बातें करने लग जाते। इसलिये जरूरी है कि उपदेश में भी उन सभी बातों का ध्यान दिया जाए जो उन बच्चियों को रुचिकर लग सकें। मैंने विषय रखा था आइना में रोजाना अपना चेहरा देखना। रोजाना की क्रियाकलापों को लेकर उस विषय को गहरे पानी में ले चलने की कोशिश करना आसान नहीं था और न ही मैं इस बात पर पूरी तरह से खरा ही उतर पाया। फिर भी कुछ पलों तक बच्चियों की खिलखिलाहट से मन को लगा कि कुछ पल ही सही, वे मेरी बातों को सुन कर प्रत्युत्तर दे रहे थे।

मेरे लिये जो सबसे अच्छी बात थी वह थी मिस्सा में काथलिक बच्चियों की उपस्थिति। बताया गया कि करीब पांच सौ काथलिक बच्चियां लोरेटो में पढ़ रही हैं। पूरे स्कूल का रंग इन पत्थलकुदुवा, गढ़ाटोली और सिरोमटोली की बच्चियों के कारण सांवला हो गया है जो कि अपने आप में एक उपलब्धि है। पूरे कार्यक्रमों में उन्हीं बच्चियों ने भाग लेकर सभी का मन मोह लिया। हो सकता है कि ये बच्चियां अपने क्लासों में अब अच्छा भी करने लगी होंगी। इसके उपर से पांच सौ से अधिक बच्चियों का होना एक गर्व का विषय था।

मिस्सा के अंत में एक छोटी चाय पार्टी का आयोजन था। चूंकि मिस्सा का समय साढ़े नौ बजे रखा गया था, मैं एक लंच की उम्मीद लगा कर घर में खाना बनाने के लिये मना कर आया था। सिर्फ नाश्ते से ही काम चलाने वाली बातें हुईं। मुझे इसका कोई गम नहीं था। सुना कि अगले दिन शहर के सभी धर्मसंघियों को नाश्ते में आने का निमंत्रण था। चलो अच्छी बात हुई। जबतक मैं लोरेटो स्कूल का प्रांगण छोड़ रहा था तो मुझे लग रहा था कि बाइस देशों में काम करने के बावजूद क्या वजह थी कि रांची में सबसे पुराने महिला धर्मसंघी होने के बावजूद लोरेटो का विस्तार एक को छोड़ दूसरे स्थानों में नहीं हो पाया। आज वे विस्तार करना चाहती हैं लेकिन तबतक काफी देर हो चुकी है और अन्य धर्मसंघी काफी आगे निकल आये हैं। पूरे प्रोविंश में अब मात्र 93 सदस्यों के साथ विस्तार कर पाना आसान नहीं है।